शुक्रवार 29.04.2022

अमर उजाला

रूपायन

अंदर के पन्नों में

- रिश्ते
- जीवन-शैली
- सौंदर्य
- कॉफी टेबल
- फूड कॉर्नर
- टैरो कार्ड

थिरकते कदमों में आपकी दुनिया

दीवार और पलंग के बीच एक दूरी तो हो...

अक्सर लोग आलीशान भवन तो बना लेते हैं, मगर उसमें बने कमरों और वातावरण को अनदेखा करते रहते हैं।

किसी भी घर की सज्जा न सिर्फ निवासकर्ता के व्यक्तित्व का आईना होती है, बल्कि उसकी सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा को भी परिलक्षित करती है। अंतःसज्जा का एक प्रमुख अंग उसका फर्नीचर होता है, जिसमें पलंग का खास महत्व है। बेड यानी विश्राम और निद्रा के लिए एक स्वच्छ, सुंदर तथा आरामदायक आसन, जो आपके पूरे जीवन पर असर डालने की क्षमता रखता है।

पलंग के नीचे रखी चीजों से हवा के सही संचार में बाधा पड़ती है। इससे आपके सपनों और आपसी संबंधों में कटुता आ सकती है।

पृथ्वी मूलभूत वास्तु है। फर्श को या उस पर कुछ ऊंचा चबूतरा बनाकर पलंग के रूप में उपयोग करना सर्वोत्तम है। इस प्रकार आप सीधे धरती मां की गोद में सोने का आनंद ले सकती हैं। यदि पलंग का प्रयोग करना हो तो इसके लिए अच्छी किस्म की लकड़ी का इस्तेमाल करना चाहिए। लकड़ी सौम्य, सुसाध्य, सजीव और सहानुभूतिपूर्ण होती है तथा शुभ ग्रहों- बुध और बृहस्पति से संबंधित है। धातु का संबंध मुख्यतः शनि और मंगल से है, इसलिए पलंग यथासंभव धातु का नहीं होना चाहिए। लेटने का स्थान समतल और दृढ़ हो, न अधिक सख्त, न अधिक मुलायम। पलंग के नीचे रखी चीजों से हवा के सही संचार में बाधा पड़ती है और इनसे सपनों तथा संबंधों में कटुता भी आ सकती है।

डॉ. रश्मि जैन
वास्तु विशेषज्ञ

वास्तु के प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, पलंग के पाये एक हाथ से अधिक ऊंचे नहीं होने चाहिए, जो लगभग 45 सेमी (18 इंच) के बराबर हैं। पलंग को यथायोग्य ताजी धुली साफ-सुथरी चादर से ढंकना चाहिए। साथ ही तकिए और गद्दे न तो अधिक सख्त हों और न अधिक मुलायम। पलंग को कमरे के नैऋत्य कोण में दक्षिण या पश्चिमी दीवार के साथ इस प्रकार रखें, ताकि उस पर लेटा व्यक्ति कमरे में प्रवेश करने वाले को आसानी से देख सके। पलंग के लिए सर्वोत्तम स्थिति प्रवेश द्वार से अधिकतम दूरी पर दाईं या बाईं ओर है। यह द्वार के एकदम सामने नहीं होना चाहिए।

पलंग दीवारों से सटा हुआ न हो। यह दीवारों से कम से कम 10-15 सेमी दूर हो, ताकि सोते समय दीवारों के कारण शरीर की ऊर्जा में कोई गड़बड़ी पैदा न हो और वायु का सतत प्रवाह बना रहे। इस प्रकार दूरी रखने से चींटियां, तिलचट्टे, मकड़ियां और छिपकलियां आदि भी पलंग पर नहीं आ पातीं। पलंग को किसी दरवाजे या खिड़की के बहुत पास भी न रखें, इससे न केवल शयनकक्ष की गोपनीयता में बाधा पड़ती है, बल्कि सोने वाला भी असुरक्षित महसूस करता है। यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो पलंग और दरवाजे के बीच कोई फर्नीचर रख दें। पलंग की आदर्श स्थिति में तीन मुख्य मानदंडों का पालन जरूरी है। इन तीनों मानदंडों का सम्मिलित प्रभाव होता है। मुश्किल पड़ने पर पलंग की सही व्यवस्था के लिए किसी वास्तुशास्त्री की सहायता भी ले सकती हैं।

- नैऋत्य, दक्षिणी या पश्चिमी क्षेत्र में स्थिति।
- द्वार से अधिकतम दूरी।
- अंदर आते व्यक्ति को आसानी से देख पाना।

शयन कक्ष में पलंग

वास्तुशास्त्र के कुछ नियमों का पालन करके आप अपने वैवाहिक संबंधों को अधिक गहरा और मधुर बना सकती हैं। मसलन, पलंग को कमरे में इस तरह रखें, ताकि उस पर दोनों ओर से पहुंचा जा सके। पलंग पर हल्के गुलाबी, आसमानी और हल्के हरे रंगों की चादर बिछाएं। ये प्रेम, स्नेह, सौम्य आदि भावनाओं के रंग हैं, जो व्यक्ति के चेतन और अवचेतन मन को शांत रखते हैं। पलंग के पास सुगंधित चंपा, मोगरा आदि के फूल रखने से भी वैवाहिक जीवन में प्रेम बढ़ता है। इसके आस-पास नियंत्रित प्रकाश व्यवस्था और मधुर संगीत भी दांपत्य जीवन में खुशहाली लाता है। पलंग के पायताने की दीवार पर कोई चित्र या सज्जा करते समय विशेष ध्यान रखें। यह सोने से पहले और सुबह उठते समय बार-बार दिखती है, इसलिए यह अवचेतन और चेतन मन पर गहरा प्रभाव डालती है। आकर्षक, सुखद, स्वयं को प्रेरित करने वाली सज्जा करनी चाहिए। उगते सूर्य, फूलों, हरियाली, मंदगति से बहता पानी, शुभ पक्षियों, जैसे- तोते, मोर, हंस, प्रियजन, जीवन उद्देश्यों के लिए प्रेरक चित्र सामान्यतः वास्तु शास्त्र में शुभ माने गए हैं।